7

सायंकालीन देववंदन

महादेव्याः कुक्षिरत्नं शब्दजीतरवात्मजम्
राजचन्द्रम् अहं वंदे तत्त्वलोचनदायकम् ।।1।।

जय गुरुदेव! सहजात्मस्वरूप परम गुरु शुद्ध चैतन्य स्वामी ।।2।।

ॐकारं बिंदु संयुक्तं, नित्यं ध्यायन्ति योगिनः
कामदं मोक्षदं चैव, ॐकाराय नमो नमः ।।3।।

मंगलमय मंगलकरण, वीतराग विज्ञान
नमो ताहि जाते भये, अरिहंत आदि महान ।।4।।

विश्वभाव व्यापि तदपि, एक विमल चिद्रूप
ज्ञानानंद महेश्वरा, जयवंता जिनभूप ।।5।।

महतत्त्व महनीयमहः, महाधाम गुणधाम
चिदानंद परमात्मा, वंदो रमताराम ।।6।।

तीन भुवन चूड़ा रतन, सम श्री जिन के पाय
नमत पाइये आप पद, सब विधि बंध नशाय ।।7।।

दर्शनं देवदेवस्य, दर्शनं पापनाशनम्
दर्शनं स्वर्ग सोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनम्
दर्शनाद् दुरितध्वंसी, वंदनाद् वांछितप्रदः
पूजनात् पूरकः क्षीणां, जिनः साक्षात् सुरद्रुमः ।।8।।

प्रभुदर्शन सुख संपदा, प्रभुदर्शन नव निधि
प्रभुदर्शन से पाइये, सकल मनोरथ सिद्धि ।।9।।

ब्रह्मानंदं परम सुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम्
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादि लक्ष्यम्
एकं नित्यं विमलमचलं, सर्वदा साक्षीभूतम्
भावातीतं त्रिगुणरहितं, सद्गुरुं तं नमामि ||10||

आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं, ज्ञानस्वरूपं निजबोधरूपम्
योगीन्द्रमीऽयं भवरोगवैद्यं, श्रीमद् गुरुं नित्यमहं नमामि ||11||

श्रीमद् परब्रह्मगुरुं वंदामि, श्रीमद् परब्रह्मगुरुं नमामि
श्रीमद् परब्रह्मगुरुं भजामि, श्रीमद् परब्रह्मगुरुं स्मरामि ||12||

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वर;
गुरुः साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्री गुरुवे नमः ||13||

ध्यानमूलं गुरुमूर्तिः, पूजामूलं गुरुपदम्;
मंत्रमूलं गुरुवाक्यं, मोक्षमूलं गुरुकृपा ||14||

अखंडमंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्;
तत्पदं दर्शितं येन, तस्मै श्री गुरुवे नमः ||15||

अज्ञानतिमिरान्धानां ज्ञानांजनशलाकया;
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्री गुरुवे नमः ||16||

ध्यानधूपं मनः पुष्पं, पंचेन्द्रिय हुताशनम्;
क्षमा जाप संतोष पूजा, पूज्यो देवो निरंजनः ||17||

देवेषु देवोऽस्तु निरंजनो मे, गुरुर्गुरुष्वस्तु दमी शमी मे;
धर्मेषु धमोऽस्तु दयापरो मे, त्रीण्येव तत्त्वानि भवे भवे मे ||18||

परात्परगुरवे नमः परम्पराचार्य गुरवे नमः
परमगुरवे नमः साक्षात् प्रत्यक्ष सद्गुरवे नमो नमः ||19||

अहो! अहो! श्री सद्गुरु करुणासिंधु अपार
इस पामर पर प्रभु किया अहो! अहो! उपकार ।।20।।

क्या प्रभुचरण तुझे धरुँ, आत्मा से सब हीन
वो तो तुने ही दिया, वर्तूं चरणाधीन ।।21।।

यह देहादि आज से वर्ते, प्रभु आधीन
दास दास मैं दास हूँ, आप प्रभु का दीन ।।22।।

षट्स्थानक समझाकर के, भिन्न बताए आप
म्यान से तलवार तक, यह उपकार अमाप ।।23।।

जो स्वरूप समझे बिना, पाया दुःख अनंत
समझाया वह पद नमूँ, श्री सद्गुरु भगवंत ।।24।।

नमस्कार

जय, जय गुरुदेव! सहजात्मस्वरूप परम गुरु, शुद्ध चैतन्य स्वामी
अंतरयामी भगवान, इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए
निसिहिआए मत्थऐण वंदामि ।।

परम पुरुष प्रभु सद्गुरु, परमज्ञान सुखधाम
जिसने दिया है ज्ञान निज, उनको सदा प्रणाम ।।25।।

नमस्कार

जय, जय गुरुदेव! सहजात्मस्वरूप परम गुरु, शुद्ध चैतन्य स्वामी
अंतरयामी भगवान, इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए
निसिहिआए मत्थऐण वंदामि ।।

देह के संग जिनकी दशा, वर्ते देहातीत
इन ज्ञानी के चरणों में हो वंदन अगणित ।।26।।

नमस्कार

जय, जय गुरुदेव! सहजात्मस्वरूप परम गुरु, शुद्ध चैतन्य स्वामी
अंतरयामी भगवान, इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए
निसिहिआए मत्थऐण वंदामि ।।

नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु, शरणं शरणं शरणं, त्रिकाल शरणं,
भवोभव शरणं, सद्गुरु शरणं, सदा सर्वदा त्रिविध त्रिविध भाववंदन हो,
विनय वंदन हो, समयात्मक वंदन हो, ॐ नमोऽस्तु जय गुरुदेव शांति,
परम तारक, परम सज्जन, परम हेतु, परम दयापूर्ण, परम प्रेमपूर्ण, परम
कृपालु, वाणी सुरसाज, अति सुकुमाल, जीवदया प्रतिपाल, कर्मशत्रु के
काल, 'मा हणो, मा हणो' शब्द करनेवाले, आपके चरणकमल में मेरा
मस्तक आपके चरणकमल मेरे हृदयकमल में अखंडपने संस्थापित रहें,
संस्थापित रहें। सत्पुरुषों का सत्स्वरूप मेरे चित्तस्मृति के पट पर
टंकोत्कीर्णवत् सदा उदित जयवंत रहे, जयवंत रहे।

आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजबोधरूपम्
योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं श्रीमद्गुरुं नित्यमहं नमामि ॥27॥